बीकानेर राजघराना और गुरु जाम्भोजी

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

राठौड़ राजाओं का सम्बन्ध गुरु जाम्भोजी से रहा है। उनके समय में ही जोधपुर, बीकानेर और मेड़ता राज्यों की स्थापना हुई थी। जाम्भोजी ने राव जोधा को बैरीसाल नगारें[1] भेंट किये थे। जोधा के पुत्र राव दूदा को मेड़ता प्राप्ति का[2] आशीर्वाद दिया था और राव बीका[3] कई बार चाण्डासर से गुरु जाम्भोजी के दर्शनार्थ सम्भराथल आये थे। राव जोधाजी (वि.सं. 1496-1545)[4] जाम्भोजी के समकालीन थे। गुरु जाम्भोजी (वि.सं. 1508-1593)[5] के समकालीन बीकानेर के शासक थे, राव बीका (1465-1504 वि.), राव नरा (वि. 1504-05), राव लूणकरण (1505-1526 वि.) और राव जैतसी (1526-1542 वि.)।[6] एक हस्तलिखित प्रति 'राव भेंटवाला रा नांव लिखते' परमानन्द कृत में राव जोधा और उनके 12 पुत्रों का और राव बीका और उनके पुत्र राव लूणकरण तथा राव लूणकरण के पुत्र राव जैतसी और प्रतापसी का उल्लेख है।[7]

वि.सं. 1526 में गुरु जाम्भोजी ने राठौड़ राव जोधा को बैरीसाल नगाड़ा दिया था। इसका उल्लेख जांभाणी कवि दुरगदास (वि.सं. 1600-1680)[8] ने अपने एक हरजस में किया है जो इस प्रकार है - 'कमधज राजा कारणै, बरस अठारा देखि।' इन नगारों के विषय में यह बात भी प्रसिद्ध है कि - गुरु जाम्भोजी ने राव जोधा को यह भी कहा था कि इन नगारों की आवाज सुनने पर तुम्हारे शत्रु भयभीत होंगे। वर्तमान में ये नगारे बीकानेर के किले जूनागढ़ में रखे हुए हैं और कैप्शन में यह भी लिखा है कि 'ये नगारे गुरु जाम्भोजी द्वारा राव जोधा को भेंट स्वरूप प्राप्त हुए थे।' मारवाड़ राज्य के बंटवारे के समय भेंट स्वरूप प्राप्त पूजनीक वस्तुओं की सूची के अनुसार ये नगारे बीकानेर राज्य को प्राप्त हो गये थे।

एक साखी से गुरु जाम्भोजी से भेंट करने वालों का नाम मालूम होता है, देखे-

रायसल वरसल सीसोदिया, नै दूदो सातिल राव।
बीको बीदो हमीर बाघो, जोध दवादस जाव।।[9]

यह सर्वविदित है कि बिश्नोई पंथ की स्थापना गुरु जाम्भोजी ने वि.सं. 1542 में की थी, देखें कवि सेवादास जी ने अपनी साखी में लिखा है–

संमत बयाळै मांह, काती बद कळस थाप्यौ।
मुकति को बुहार कीनौ, साचौ गुरु जाणियौ।।[10]

इसी तरह कवि सुरजनदासजी पूनिया ने अपनी साखी में बताया है कि वि.सं. 1542 में मरुधरा में अकाल पड़ा था। उस समय गुरु जी ने लोगों को अन्न देकर उनकी सहायता की थी। संभवत– आज की अकाल राहत योजना गुरुजी ने उस समय ही शुरु कर दी थी। साखी का मूल छंद देखें–

काळ बयाळौ कहत सही, अन्न दे जीव उबारिया।
कातिग बदि हरि कळस थप्यौ, सतगुरु जुगि जुगि तारिया।।[11]

बीकानेर राज्य राजपूताने के सबसे उत्तरी हिस्से में 27012' और 30012' उत्तर अक्षांश और 72012' से 75012' पूर्व देशांतर के बीच फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 23317 वर्ग मील है। बीकानेर के उत्तर में पंजाब का फिरोजपुर जिला, उत्तर–पूर्व में हरियाणा का हिसार जिला, उत्तर–पश्चिम में पाकिस्तान का बहावलपुर जिला, दक्षिण में जोधपुर, दक्षिण–पूर्व में जयपुर, दक्षिण–पश्चिम में जैसलमेर, पूर्व में हिसार–लोहारू के परगने शामिल थे। इसमें सुजानगढ़ को छोड़कर कहीं पर्वत श्रेणियां नहीं है। इसमें काटली (जयपुर) और घग्घर (हाकड़ा) दो नदियाँ है जो सूखी हैं। इसमें गोदारा, सारण, कस्वां, बैणिवाल, पूनिया, सिहाग, सोहुआ गौत्र के जाटों के गरसिया राज्य थे। इनमें गोदारा के 360, सारण के 360, कस्वां के 360, बैणिवाल के 360, पूनिया के 360, सिहाग के 140, सोहुआ के 84 गांव थे। ये आपस में सत्ता के लिए संघर्षशील थे। जांगलू पर उस समय राठौड़ बीका के मामा नापा सांखला का अधिकार था। उसने बीका को बीकानेर पर अधिकार करने के लिए प्रेरित किया। ऐसी स्थिति को देखते हुए बीका ने बीकानेर पर अधिकार किया और बीकानेर राज्य की स्थापना की थी। ऐसा ही एक दोहा प्रचलित है, देखें –

पनरै सै पैंतालवै, सुद वैसाख सुमेर।
थावर बीज थरपीयो, बीकै बीकानेर।।[12]

हम बीकानेर राजघराने के गुरु जाम्भोजी के सम्बन्धों का वर्णन करे उससे पहले हम बीकानेर के सरदार बीदा के सम्बन्ध में भी जान लें तो उचित रहेगा। क्योंकि बीदा का उल्लेख भी जाभाणी साहित्य में हुआ है। राव जोधा के 17 पुत्र थे।

उनकी सांखली रानी नौरंगदे से बीका और बीदा पुत्र हुए थे। बीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना की थी। बीदा ने मोहिल चौहानों का प्रदेश छापर-द्रोणपुर राव बीका की सहायता से प्राप्त किया, जो बीकानेर राज्य में है और इसके वंशज बीकानेर के सरदार हैं।

राव बीका ने बीकानेर राज्य की स्थापना वि.सं. 1545 में की थी, इस बात की पुष्टि उपर्युक्त लौकिक दोहे और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों से होती है। उस समय उसके साथ उसका भाई बीदा भी था। उसने बीदासर की स्थापना वि.सं. 1568 में की थी। बीदासर का क्षेत्र छापर-द्रोणपुर का है, जिस पर राव जोधा ने मोहिल अजीत से पूर्व में ही छीन लिया था। राव बीदा ने बीदासर को अपनी जागीर की राजधानी बनाया। इस बात का पता कवि वील्होजी की 'कथा दूणपुर की' से चलता है।

कथा के अनुसार मोती मेघवाल द्रोणपुर क्षेत्र[13] में ही रहता था। वह गुरु जाम्भोजी का अनन्य भक्त था। इस बात से नाराज होकर राव बीदा ने उसे अपनी कैद में डाल दिया। इस कथा में मोती को राव की कैद से छुड़ाने का वर्णन है। इस कथा से राव बीदा के ऊँची जाति के होने के कारण दम्भ का पता चलता है, वहीं नीची जाति का होते हुए भी मोती मेघवाल बिश्नोई पंथ को मानता है एवं ठाकुरों से छुआछूत करता है। इससे यह भी मालूम होता है कि बिश्नोई पंथ में किसी प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं था बल्कि आचरण की शुद्धता एवं नियमों के प्रति प्रतिबद्धता की ओर ध्यान दिया जाता था।

कथा में यह भी बताया है कि गुरु जाम्भोजी से राव बीदे ने तीन 'परचे'[14] (1) आकों के आम (2) नीम के पेड़ों के नारियल (3) पानी को गाय का दूध बना देने, मांगे थे। गुरु जाम्भोजी ने उसे ऐसा कर दिखाया, इससे उसे संतोष न हुआ। इसलिए उसने उन्हें सहस्त्र रूप करके बताने को कहा। गुरुजी ने उसे ऐसा करके बताया। बीदा ने कई जगहों पर अपने आदमी यह जानने को भेजे। लेकिन सभी को उन जगहों पर गुरुजी का वही रूप (जैसा उसके सामने था) प्रत्यक्ष दिखाई दिया। उनकी वाणी में ऐसा एक सबद भी है, जो उन्होंने बीदा को उस समय कहा था। इन सभी परचों से यही प्रकट होता है कि लोग उस समय तंत्र-मंत्र एवं चमत्कार में बहुत विश्वास रखते थे। कहा भी है कि बिना 'परचे' के तत्कालीन लोग चाहे वे किसी भी वर्ग के हो, नहीं मानते हैं। वे किसी महान व्यक्ति को ऐसे ही स्वीकार नहीं करते है।

इस बात का प्रमाण यह कथा है।

राव बीदा राठौड़ का सम्बन्ध कवि सुरजनजी दुरगदास, परमानन्द, हीरानन्द आदि की रचनाओं से भी चलता है।[15] उपरोक्त घटना का समय वि.सं. 1550–1555 के मध्य का होना लगता है, क्योंकि यह घटना राव बीदा के द्रोणपुर में रहते हुए घटी थी। वह वहां बीदासर बसाने से पहले रहा होगा। इस घटना का पता कई अन्य रचनाओं के साक्ष्य से चलता है। इन घटनाओं से यही पता चलता है कि राठौड़ राव बीदा का सम्बन्ध जाम्भोजी से रहा है। बीदासर बीकानेर राज्य के अन्तर्गत ही रहा है।

बीकानेर के राठौड़ राव गुरु जाभोजी से मिलते रहे हैं। राव बीका का पुत्र राव लूणकरण तो गुरु जाम्भोजी को बहुत मानता था। एक बार बीकानेर के राव लूणकरण एवं नागौर के मुहम्मद खां नागौरी में विवाद हो गया था कि जाम्भोजी हिन्दुओं के देव है अथवा मुसलमानों के पीर हैं। लूणकरण राव और मुहम्मद खां का संवाद देखिये –

राजा कहै सुनहु सूबेदारा, देव जानियै एह आचारा।
अस्नान ध्यान संध्यादिक कर्मा, होम जाप रजू सूतक धरमा।
विश्नु भजै अरु अंनहि जिमावै, मद आमख सूं दूर रहावै।
तातै देव हमारो जानों, तुम कहो पीर कवन विधि मानों।
महमंदखान बतावै पीरा, कछुवन दीखे तुमरो सीरा।
सिर पर चोटी राखै नाहीं, विवाह मध्य फेर न कराहीं।
सब हिन्दू ब्राह्मण कूं मानैं, ये ब्राह्मण कु चेलेहि ठानैं।
ब्राह्मण कर जीमहिं संसारा, एहि कै सम ब्राह्मण चमारा।
गंगा गया श्रादादिक कर्मा, अड़सठ तिरथादिक सब घरिमा।
एह सब करहिं हिन्दू सदाई, जंभ पीर एहि निकट न जाई।
दाग जमी का घोर अरु कफना, एहिविधि मानहि पीरजु अपना।
इनका राहा है सोई हमारा, जंभ पीर नहीं देव तुम्हारा।[16]

इस प्रकार के विवाद में राव ने अपने एक पुरोहित को एवं सूबेदार ने अपने काजी को गुरु जाम्भोजी के पास भेजा। गुरु जी ने दोनों को अपने सबद बताए। उन्होंने कहा मैं सच्चे हिन्दू के लिए देव हूँ और सच्चे मुसलमान के लिए उनका पीर

हूँ। मैं तो सच्चे इंसान का हूँ। इसमें जाति-पाती का प्रश्न नहीं है।

जाम्भोजी के समय में बीकानेर क्षेत्र के तेजोजी चारण, डेल्हजी, आंछरे, कील्हजी, कोल्हजी, कान्होजी बारहठ, सुरजनजी, केसोजी देहडू, लालचन्द नाई, रायचन्द सुथार, राव लूणकरण, रेड़ोजी सांवक, नाथोजी, लखमणजी गोदारा, आलमजी, मेहोजी आदि प्रसिद्ध कवि हुए है।[17] इन्होंने गुरु जाम्भोजी सम्बन्धित साखियां, हरजस, कवित्त, कथाएं आदि अनेक छंद लिखे हैं। तेजोजी चारण ने गुरु जाम्भोजी को आदि विसन माना था। उन्होंने उनकी प्रशंसा में ग्रंथ *विसन विलास* लिखा था।[18] कवि रायचन्द सुथार की साखियां प्रसिद्ध है। कवि मेहोजी ने राजस्थानी भाषा में प्रथम रामायण लिखी थी। यह रामचरित मानस से पहले लिखी गई थी।

यह इतिहास प्रसिद्ध है कि राव बीका की मृत्यु के बाद बीकानेर की राजगद्दी पर राव लूणकरण बैठा था। हालांकि बीका के तीन पुत्र - नरा, घड़सी और लूणकरण थे। कुछ समय के लिए नरा राजगद्दी पर बैठा लेकिन अल्प-आयु में उनकी मृत्यु हो गई। घड़सी राव लूणकरण से बड़े थे और गद्दी के उत्तराधिकारी भी थे लेकिन गद्दी मिली राव लूणकरण को। शायद यह जाम्भोजी के आशीर्वाद और चमत्कार का फल था।

यह प्रवाद[19] प्रचलित है कि राव लूणकरण को राज्य प्राप्ति का आशीर्वाद जाम्भोजी ने ही दिया था। कहते हैं, एक बार घड़सी और लूणकरण जाम्भोजी के पास गये। लूणकरण ने जाम्भोजी को झुककर नमन किया लेकिन घड़सी सीधे ही खड़े रहे। तब जाम्भोजी बोले - *सुन रे घड़सी, बीकाणै रो राज लूणकरण करसी*। घड़सी ने उत्तर दिया - *लूणकरण करसी भाठौ।' जाम्भैजी कह्यौ - भाठै में गढ*।'

कहते हैं जाम्भोजी ने जितने भी शब्द कहे हैं - वे सभी किसी व्यक्ति को सम्बोधित करके कहे थे। इस प्रकार *आदि सबदवाणी* के सबद संख्या 6, 63, 65, 66, 67 में आये प्रसंगों से भी राव लूणकरण का सम्बन्ध जाम्भोजी से प्रगट होता है। ये सबद उन्होंने राव लूणकरण को सम्बोधित करके कहे थे।[20]

एक बार राव लूणकरण का पुत्र कुंवर प्रतापसी अपने घोड़े को नचाता जाम्भोजी के पास पहुंचा। वहां उपस्थित जनसमूह ने कहा कि घोड़ा बहुत कूदना है। तब जाम्भोजी ने एक आध्यात्मिक सबद कहा - *वै कंवराई पार गिराई, ये कंवराई*

खेह रळाई (सबद-63)। बिश्नोई कहते है कि कुंवर प्रतापसी बडो भागबली है। तब जाम्भोजी ने बताया कि पहले तो सवाया भाग था लेकिन जब वह जैसलमेर गया था और वहां हरे वृक्ष कटाये, तब से भाग एक रत्ती नहीं रहा।[21]

एक अन्य प्रसंग[22] से पता चलता है जब राव लूणकरण ढौसी (नारनौल) जाने के लिए तैयार हुए तो उन्होंने मुहूर्त जानने के लिए जोगी, संन्यासी, भगत-वसना, सेवड़ा तथा डाकोत आदि बुलाये। सब ने यही कहा कि रावजी की जीत होगी। 'रावजी साथ भेळो करके कांणवत डेरो कियो।' जाम्भोजी ने कहा कि वरसी, तूं रावजी को अब जाने के लिए मना कर दे। वे जायेंगे तो हार होगी। छह मास बाद तुम्हारी जीत होगी। मैं यहां उन्हें मना करने के लिए आया हूँ। रावजी ने बीजो मालावत को जाम्भोजी के पास भेजा। बीजो ने कहा कि देवजी आप राव जी को मना मत करो। सभी कहते हैं कि रावजी की जीत होगी। हमारे देव हमारे साथ हैं। जाम्भोजी ने कहा कि सबसे पहले तूं ही भागेगा। यह इतिहास प्रसिद्ध है कि नारनौल के युद्ध में राव लूणकरण की हार हुई थी और वे मारे गये थे।

राव लूणकरण आगे बढै। कुंवर जैतसी ने साथ जाने के लिए रावजी से उनका घोड़ा मांगा। रावजी उनसे नाराज हुए। उसे कहा कि तुझे घोड़ा नहीं - भाठा, मोटा दगड़ (बड़े पत्थर)। इस बात से जैतसी नाराज हुआ और गुरु जाम्भोजी के पास आया और रावजी की नाराजगी की बात बताई। जाम्भोजी ने कहा - 'गढ कोट थारो, देश थारो, वळै किसुं चावै।' फिर जैतसी ने कहा - 'झांभजी वाहर दळबळ जावतौ घणौ छ। राजपूत कहे, कंवर जी, क्यौं सबद मांहे समझा। जैतसी कहै सबद मांहे समझा घणौ इज छां। झांभोजी साच कहै छ। धरती ऊपरै न कोई रह्यौ, न कोई रहेसी। झांमजी री महां ऊपरै तो मया छ' (मूल बात)।

कवि ऊदोजी नैण (वि.सं. 1505-1594) ने अपने एक कवित्त में सांसारिक नश्वरता और असारता का जिक्र करते हुए लूणकरण का नाम लिया है-

गया चौंतीसौ पातसाह, और किता भूपालुं।
विक्रमजीत अरु भोजराज, गयौ ज मुंज बलालुं।
सांतल सूजा वीका गया, खान जु गयौ पिरोज।
'लूणकरण' सा होय गया, ताको माघ न खोज।

मंडळीक अरु चक्रवर्ती, किता हुआ धरती धणी।

गोपीचंद अरु भरथरी, ऊदा गुर भेंट्यौ लाधी घणी।।11।।[23]

एक दूसरे कवित्त में ऊदोजी ने वि.सं. 1583 में हुए नारनौल युद्ध का वर्णन किया है–

किता मिंदर माळीया, सुख वासण सेझ पिलंग।

किता गैंवर गूंजता, साहण तूरी तुरंग।

किता चंवर चवरासीया, दळ बळ व दीवांण।

किता सू मुंहतो कर्मसी, जित धुरता निसांण।

अतरा मूवा नारनौळ, जगि सांभळीयो नांव।

कितरां सूं कंवर प्रतापसी, 'लूणकरण' कित राव।।15।।[24]

इन दोनों कवित्तों से पता चलता है कि राव लूणकरण का सम्बन्ध गुरु जाम्भोजी और बिश्नोई पंथ के लोगों से अवश्य रहा है। इस कारण ही गुरु जाम्भोजी के अनन्य भक्त कवि ऊदोजी नैण ने अपने कवित्तों में राव लूणकरण का नाम लिया है। इसी तरह ही जांभाणी कवि कैसौजी गोदारा ने भी 'कथा चित्तौड़ की' की एक चौपाई में लूणकरण का नाम लिया है, देखें –

कीनक तणां ज्यौं दीठा ठांव, जुवा जुवा पांचां रा नांव।

'लूणकरण' पूरबली सेव, कळसी घड़ौ दीरायो देव।।85।।[25]

वि.सं.1818–19 के परमानन्द जी के पोथे में कवि हीरानन्द कृत हिंडोलणो के एक छंद में भी 'लूणा' नाम आया है, जो संभवतः राव लूणकरण ही है–

खियां नाथा पूरब डूंमा, राणा प्रीत विचार।

काजा बूढा 'लूणा' सायर, आए पूल्ह पंवार।।[26]

इसी प्रकार एक अज्ञात कवि कृत 'जाम्भैजी रै भगतां री भक्तमाल' में भी 'लूणा' का नाम आया है। ये 'लूणा' राव लूणकरण ही है–

खींयो नाथो डूमो ध्याय, बिसन चरण सूं लिया लगाय।

'लूणा' काजा सायर जाण, जाम्भैसर नैं लियो पिछाण।।

कवि परमानन्द जी बणियाळ ने अपने एक छंद में इस 'लूण' शब्द को लिया है, जो राव लूणकरण का नाम ही है।

जोधो बीको लूण जैतसी, त्रीकम प्रगट ताम।
थापन अकर थरपिया, मोटो धाम मुकाम।।[27]

साहबरामजी राहड़ ने जम्भसार में लिखा है कि लूणकरण और प्रतापसी जाम्भोजी से मिलने कई बार समराथल आये थे–

सांगो राजा मेड़तियो, महमंद खां केउ ओर।
लूणकरण प्रतापसी, आये मिलन बहोर।।[28]

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने भी कान्होजी बारहठ (वि.सं. 1500–1580) के प्रसंग[29] में कहा है कि राव लूणकरण को जाम्भोजी की ओर इन्होंने ही आकृष्ट किया था। उपर्युक्त सभी विवरणों से बीकानेर के राव लूणकरण का जाम्भोजी से सम्बन्ध स्पष्ट होता है। वह जाम्भोजी से बहुत प्रभावित था और समय–समय पर उनसे सम्भराथल पर मिलने जाया करता था। वह उन्हें अपना गुरु और देवता मानता था। गुरु जाम्भोजी ने उन्हें गुरु ज्ञान दिया और अनेक शब्द भी सुनाये थे। राव अपने कार्यों में गुरु जाम्भोजी से राय लिया करता था। केवल एक बार नारनौल के युद्ध में जाते समय जाम्भोजी का कहना उसने न माना। इस बात का उसे खामियाजा भुगतना पड़ा और वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ।

राव लूणकरण का जाम्भोजी के प्रति सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि उसने श्रद्धावनत जाम्भोजी की स्तुति में पांच कवित्त कहे थे। इन कवित्तों में गुरु के रूप, उनके गुण और कार्यों का वर्णन है। कवित्त के अन्त में रचयिता के नाम की छाप है। ये कवित साहबरामजी राहड़ के हस्तलिखित ग्रंथ 'जम्भसार' में लिखे हैं जो अन्यत्र कहीं प्रकाशित नहीं हुए हैं। जम्भसार उन्होंने अन्य जांभाणी हस्तलिखित प्रतियों को देखकर ही लिखा था, ऐसा उन्होंने अपने उक्त ग्रंथ जम्भसार की भूमिका में लिखा है। राव लूणकरण का वह एक कवित्त यहां प्रस्तुत है, देखें –

जम्भ गुरु सो देव, न कोउ सुण्यौ न देख्यौ।
घ्रत धूप मिष्ठान, होम क्रत नित प्रति पेख्यौ।
करै विष्णु उपदेश, लेश जिव पाप न राखै।
सब दुनिया सूं हेत, खेत मुक्ति गुण भाखै।
आन देव किए दूर सब, कहे गुणा हरि सेव।

लूणकरण राजा कहे, नमो नमो गुर देव।।

कवि साहबराम जी राहड़ कृत 'जम्भसार' के एक छंद से भी पता चलता है कि वि.सं. 1563 में राव लूणकरण संभरा नगरी आकर जाम्भोजी से मिला था। मूल छन्द इस प्रकार है–

पनरासै रू तेसठे सइया, कुळ राणां विश्नोई भइया।
जम्भ गुरु जमाता सगरी, ता दिन आए संभरा नगरी।
मिलिया लूण जैतसी राई, भया आनन्द बंटी बधाई।

इस बात से यह सिद्ध होता है कि उस समय ही राव लूणकरण ने जाम्भोजी की स्तुति की और श्रद्धावनत ये कवित कहे। राव लूणकरण की देवताओं एवं संत–महात्माओं में बड़ी श्रद्धा थी। यहां छंद में जैतसी का नाम भी आया है जो रावळ जैतसी जैसलमेर के लिए है।

गुरु जाम्भोजी ने मार्गशीर्ष वदी 9 वि.सं. 1593[30] को लालासर की साथरी पर अपना नश्वर शरीर छोड़ा था। अपने अंतिम समय में वे समराथल से लालासर की साथरी चले गये थे। वहां से उनके शरीर को उनके शिष्य तालवा गांव ले आये थे जो समराथल के नजदीक ही था। यहां मार्गशीर्ष वदी 11 वि.सं. 1593 को उन्हें समाधि दी गई। उनके शरीर का अंतिम मुकाम यही तालवा में ही है, इसलिए कालान्तर में यह गांव तालवा मुकाम से जाना जाने लगा। आज इस गांव को मुकाम के नाम से ही जानते–पहचानते हैं। समाधि मंदिर की नींव पौष सुदी 2, वि.सं. 1593 को दी गई। गुरु जाम्भोजी का समाधि मंदिर चैत्र सुदी 7, वि.सं. 1597 को बनकर राव जैतसी के समय में तैयार हुआ। इस पर पांच लाख छह सौ रुपये लगे।[31] इस मंदिर को गुरु जाम्भोजी के पाटवी शिष्य रणधीरजी बाबल ने बनाया था। मंदिर जब कंगूरों तक पहुंचा तब ही रणधीरजी बाबल का स्वर्गवास हो गया था।

गुरु जाम्भोजी के निर्वाण के पश्चात भी बीकानेर राज्य में कई प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने जांभाणी साहित्य के लेखन एवं संकलन में विशेष योगदान दिया था। उनमें कुछ कवियों के नाम इस प्रकार हैं –[32] दुरगदास, केसौजी गोदारा, रूपो बणियाळ, हरजी बणियाळ, दामोजी, रासोजी, मुकनजी, सेवादासजी, सुदामाजी, परमानन्दजी बणियाळ, अमरा थापन, विष्णुदास, गोविन्दराम गोदारा,

खेमदास जाखड़, साहबराम राहड़ आदि। परमानन्दजी बणियाळ ने सम्पूर्ण जांभाणी साहित्य का संकलन अपने विभिन्न आठ पोथों में किया था। इसी तरह साहबरामजी राहड़ ने भी बिश्नोईयों का इतिहास पुराण ग्रंथ 'जम्भसार' लिखा। इनके पूर्वज भी बीकानेर क्षेत्र के पारवा गांव में रहते थे।

जैसा कि पहले लिख चुके हैं कि मुकाम का मंदिर राव जैतसी के शासनकाल में रणधीरजी ने बनाया था। चैना नामक थापन का झगड़ा किसी बात के कारण उनसे हो गया था। उसने विष देकर रणधीर जी को मार डाला एवं स्वयं दिल्ली चला गया। वहां वह बादशाह से मिला और परवाना भी ले लिया। एक ऐसा ही परवाना उसके काम में दखल न देने का भी है। कहते हैं उसने वहां काजी की लड़की से शादी कर ली और मुसलमान बन गया। वह काम में दखल न देने का परवाना लेकर मुकाम आया। वहां आने पर उसे पाहल देकर बिश्नोई बनाया गया और उसका नाम चौखा रखा गया। कहते हैं – उसने मुसलमान काजियों से मुकाम मंदिर वापिस लेने के बाद लोगों से अधिक कर लेना शुरु कर दिया, तब लोगों ने कहा चोखै का यह काम चोखा नहीं है।

एक अन्य फारसी परवाने[33] की नकल देखिये– इस सिलसिले में दीवान सद्दुतुल आलिया से जो हुकम सादी हुआ है, उसके लिए अर्ज है कि मेरे मुव्वकिल के लिए कोई बनाम हुकम व अमला मालचारिया व हुकाम कानूनगो रियाआ मजारआन बीकानेर रोजी मुकर्रर नहीं है। लिहाजा उम्मीदवार को रोजी मुकर्रर की जावै। इसके लिए हुकम है कि मौजा मुकाम, इलाका बीकानेर रोजी के लिए व निज जमीन 700 जरीब पुख्ता मौजा तालवा नाम बुर्दा को अदा की हुई है। साथ नूफी घर बिश्नोईयान 2 रुपये मुकर्रर किया जावै। मौजा पीपासर जागीरदार व कागदारान कूवे से पानी पीये व जमीन 700 जरीब धाम के नाम मुकर्रर है, सज्जादानशीन के नाम है। इलाका जोधपुर व 15 मौजा इलाका बीकानेर व सात अदद मोजा जैसलमेर इलाका व उदयपुर वास्ते धाम की रोजी के लिए मुकर्रर है। इसलिये मवाजेआत से महसूल व चीजे माफ है जो दुरुसत है।

खीउल अकल 922 हिजरी

बिश्रोई समाज में बहु प्रचलित एक बलिदान की साखी से भी बीकानेर के

राज्य पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है, इसमें वर्णित घटनाओं का समय सन् 1543–1616 का है। इस समय में राव कल्याणमल, रायसिंह और सूरसिंह बीकानेर के शासक हुए थे। साखी से पता चलता है कि शासकों को रुपयों की विशेष आवश्यकता थी। यह सम्भव भी है क्योंकि बीकानेर का किला सन् 1593 में पूरा हुआ था। इस समय के दौरान बिश्नोइयों ने अतिरिक्त दाण (कर) न देने, धूवे का कर जबरदस्ती लेने, जांभाणी बकरों को बचाने, मंदिर पर कलश चढाने के लिए बलिदान दिये थे। उस समय बिश्नोई अजमेर से भी कोई परवाना लिखा कर लाये थे, जिसका उल्लेख साखी में है।[34]

महाराजा अनूपसिंह (1669–98 ई.) के समय में परवाना पट्टायत पंवार जगरूप को नाजर आनन्दराम की ओर से, गाँव तालवा के 10 खेत थापनों को दिलाने और हरे वृक्ष न काटने का दिया गया था।[35] भदूसर, सलूंडा, जेगला, खारा, हिमटसर आदि बिश्नोई गांवों का जिक्र बीकानेर की बही में है।[36] मुकाम मंदिर को महाराजा सुजानसिंह (1700–35 ई.) द्वारा 3000 बीघा जमीन देने व जांगलू मंदिर को[37] 1000 बीघा जमीन देने का उल्लेख बीकानेर रिकॉर्डस में हुआ है।[38]

बीकानेर राज्य द्वारा बिश्नोईयों को भूमि आदि देने के अतिरिक्त थापनों से बिना गुनाह कुछ भी न लेने की राजाज्ञा भी सन् 1820 और 1830 ई. में जारी की गई थी।[39] इसी तरह मुकाम मंदिर में आये हुए चढ़ावे को चार भागों में बांटने तथा श्री गुरु जाम्भोजी के मंदिर में खर्च किये गये रुपयों को चुकाने के परवाने भी बीकानेर अदालत की ओर से जारी हुए थे।[40] बीकानेर राज्य ने बिश्नोइयों की धार्मिक भावनाओं का पूर्ण आदर किया था। शासकों ने समस्त कसाइयों को बिश्नोइयों के गांवों में से बकरा आदि जानवर लेकर निकलने की मनाही की थी। इसी तरह उन्होंने मुकाम में से मेढे न लेने के आदेश सन् 1850 तथा 1873 ई. में प्रसारित किये थे।[41] स्वयं बिश्नोइयों ने भी मुकाम मेले के अवसर पर, अपने धर्म नियमों की पालनार्थ, सन् 1815 तथा 1893 ई. में ऐसी लिखते की थी।[42]

बीकानेर महाराजा की ओर से तो राज्य में हरे पेड़ काटने की पूर्ण मनाही का आदेश सन् 1899 में प्रसारित हुआ था। हरे पेड़ काटने वाले के लिए राज्य ने 15 दिन की कैद और 10 रुपये जुर्माने का प्रावधान रहा था।[43] इसी आदेश को सन् 1941 में

नवीनीकरण किया था। यह सम्भवत: बिश्नोइयों के धार्मिक नियम 'हरे पेड़ न काटना' को ध्यान में रखकर किया था। गुरु के ज्ञानस्थल 'सम्भराथल' के बड़े जलकुण्ड पर सन् 1941 का एक शिलालेख लगा है। इसमें महाराजा गंगासिंह जी द्वारा यहां के यात्रियों के लिए जलकुण्ड, धर्मशाला, सदाव्रत, मंदिर आदि बनाने वाली कमेटी के निर्माण का प्रमाण मिलता है।[44] राजूराम गायणा ने तो महाराजा गंगासिंह को अपनी कविता के बल से प्रभावित करके मुकाम मेले में (मंदिर के निकट) खाल (चमड़ा) के व्यापार को बन्द करवाया था।[45]

बीकानेर के शासकों ने बिश्नोइयों की आचार-संहिता का सम्मान किया था और उसे अपने राज्य में लागू किया था। यहां के शासकों ने हरे पेड़ काटने पर जुर्माना और कैद की सजा का प्रावधान रखा था, जो अन्य राज्यों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण था। वास्तव में यहां के शासकों ने पेड़ के महत्त्व को मरुस्थलीय परिप्रेक्ष्य में समझा था। अत: हम कह सकते हैं कि बीकानेर राजघराने के संबंध गुरु जाम्भोजी से बहुत मधुर थे। वे समय-समय उनसे सीख लेते थे। गुरु जाम्भोजी से जो सम्बन्ध राठौड़ राव जोधा के स्थापित हुए थे, वैसे ही मधुर सम्बन्ध बीकानेर राज्य के उनके पुत्र राव बीका, बीदा उनके पौत्र राव नरा, लूणकरण और उनके पड़ पौत्र राव प्रतापसी से रहे हैं। कालान्तर में बीकानेर राजघराने के सम्बन्ध गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रचलित बिश्नोई पंथ के लोगों से सतत् अच्छे रहे हैं, जो आज भी अच्छे ही हैं।

संदर्भ

1 गौरीशंकर हीरानन्द ओझा, *बीकानेर राज्य का इतिहास,* पहला भाग, सन् 1939, अजमेर, पृ. 106। इन नगारों को 'बैरीसाल नगारा' कहते हैं। ये आजकल जूनागढ़ (बीकानेर) में रखे हैं। ये राज्य की पूजनीक वस्तुओं में है। इन्हें राव बीका ने जोधपुर से लड़ाई करके प्राप्त किया था। बीकानेर गजेटियर, तवारीख राजश्री बीकानेर, बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध आदि ग्रंथों में भी इनका उल्लेख है।

2 *वील्होजी कथा जैसलमेर की, परमानन्द का पोथा (वि.सं. 1818-19),* पृ. 173, कवित नं. 18

3 महात्मा जाम्भोजी और राव लूणकरण, पृ. 22-28 *वैचारिकी,* भाग-8,

अंक–1, जुलाई–सितम्बर, 1992

4 कृष्णलाल बिश्नोई, *गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास,* सम्भराथल प्रकाशन, अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा), 2000, पृ. 314

5 वही, पृ. 50

6 वही

7 वही

8 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों के हरजस,* संभराथल प्रकाशन, अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा) 1994, पृ. 131–132

9 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों की साखियां,* राज. प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, बीकानेर (अप्रकाशित)

10 कृष्णलाल बिश्नोई, *गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास,* पृ.314–15

11 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों की साखियां,* वही

12 करणीसिंह, *बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध,* बीकानेर आर्ट पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, बीकानेर, 1968, पृ. 28

13 गोविन्द अग्रवाल, *चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास,* पृ. 401–404 पर द्रोणपुर क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया है।

14 कृष्णलाल बिश्नोई, *वील्होजी की वाणी,* जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, तृतीय संस्करण, 2016, कथा दूणपुर की, पृ. 172–183

15 *बिश्नोई संतों के हरजस,* पृ. 131–135

16 साहबराम, *जम्भसार,* सम्पादक श्रीरामदास, 1921

17 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों की वाणियों का पर्यालोचन,* (भाग 1, 2), सम्भराथल प्रकाशन, बीकानेर, सन 2022

18 कृष्णलाल बिश्नोई, *तेजोजी चारण,* साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2008

19 यह प्रवाद मुझे श्री जगदीस दास राठौड़ ने आज से 30 वर्ष पूर्व सन् 1992 में बताया था। तीन वर्ष पूर्व 80 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। वे

1995 में संन्यासी बन गये और उनका नाम था – नवल माधुरी शरण। वे चरणदासी सम्प्रदाय के महन्त बने।

20 हीरालाल माहेश्वरी, *सबदवाणी,* सोहनलाल गोदारा, 29 बी. बी. श्रीगंगानगर (राज.), 1976

21 आदि सबदवाणी, *परमानन्द का पोथा* (1818–19) अप्रकाशित ह.लि. प्र.

22 वही

23 ऊदोजी, *ऊदो जी का छप्पय कवित्त,* लि.का. 1858, रा.प्रा.वि.प्र., बीकानेर (राज) परिग्राहांक 3260

24 वही

25 *कथा चित्तौड़ की – विविध बिश्नोई कथाएं,* लि.क. श्रीराम मिश्र लि. का संवत् 1944, पत्र 59–71

26 *बिश्नोई संतों के हरजस,* पृ. 131–135

27 *परमानन्द का पोथा,* वही

28 *जम्भसार,* पूर्वोक्त

29 हीरालाल माहेश्वरी, *जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य,* भाग–2, बी. आर. पब्लिकेशन, कलकत्ता, 1970, पृ. 533–537

30 कृष्णलाल बिश्नोई, *गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास,* पृ. 314

31 *शब्दवाणी जम्भसागर,* संशोधक – श्री रामदास, प्रका. श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी टीबा, फिरोजपुर, 1936, पृ. 462

32 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों की वाणियों का पर्यालोचन,* (भाग–1), पृ. 26–52

33 *फारसी परवाना,* नं. 2 (व्यक्तिगत संग्रह)

34 कृष्णलाल बिश्नोई, *बिश्नोई संतों की साखियां,* रा.प्रा.वि.प्र., बीकानेर (राज.) अप्रकाशित

35 *परवाना बही*–1, पृ. 50, महाराजा अनूपसिंह जी संवत 1752, जेठ सुदि–4, बीकानेर

36 *नकल बही परवाना,* बीकानेर, बही–1/1, संवत् 1749

37 बीकानेर रेकार्ड्स, रोबदार महकमा, माल सदर राज श्री बीकानेर, मिसल नं. 1, संवत् 1758, जेठ वदी–1

38 बीकानेर रिकॉर्ड्स मिसल मुरतिबा, तहसील–सूरपूरा, मिसल नं. 161

39 बीकानेर रेकार्ड्स परवाना, बही नं.–1, पृ. 155, 264

40 (क) परवाना बीकानेर अदालत, चैत्र सुदी–7, सं. 1887
(ख) वही परवाना, ज्येष्ठ सुदी–1, सं. 1898

41 (क) वही, परवाना मार्गशीर्ष वदी–11, सं.1907
(ख) वही, परवाना पौष सुदी–14, सं. 1930

42 (क) लिखत मुकाम मेले की, फागुन सुदी–1, सं. 1872
(ख) बही, लिखत, सं. 1950

43 *बीकानेर राजपत्र,* शनिवार तारीख 15, 1941

44 शिलालेख की मूल प्रति लेखक के पास है।

45 राजूराम गायणा के जमाता बीरबलराम लटियाल ने यह बात सन् 1992 में इस लेख के लेखक को स्वयं बताई थी। यह बात राजूराम जी के भजनों में भी आई है।

बी–111, बिश्नोई भवन, समतानगर
कृषि उपज मण्डी के सामने
बीकानेर (राज) 334004